संयुक्त राष्ट्र में भारत की भूमिका

बौद्ध भिक्षु दलाई लामा ने सही ही कहा था :-

“शांति केवल वहीँ स्थापित होती है जहाँ मानव अधिकारों का सम्मान किया जाए , जहाँ गरीब से गरीब शिक्षा एवं प्रफुल्लता से परिपूर्ण हो और जहाँ व्यक्ति एवं राष्ट्र स्वतंत्र हों”

पृथ्वी एक वर्तुल चक्र है जिसको विकट से विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है | यदि उजाला आता है तो अँधेरे की व्याधि तिरोभूत होकर उसी के साथ आती है जो समय आने पर विस्तृत हो उठती है | ऐसी विषम परिस्थितियों में हमें मानवीय मूल्यों का ध्यान रखते हुए दृण संकल्प के साथ अपने भाई बंधुओं की सहयता करनी चाइये | परन्तु इसके विपरीत इंसान कुटिल एवं अंधविश्वासी हो गया है और मानवीय सरोकार भूलता जा रहा है | इन्हीं विकट परिस्थितयों को ध्यान में रखते हुए विश्व प्रसिद्ध अकादमी संयुक्त राष्ट्र का जन्म हुआ |
संयुक्त राष्ट्र एक अंतर्राष्ट्रीय संघठन है , जिसके उद्देश्य में उल्लेख है कि वह अंतर्राष्ट्रीय कानून को सुविधाजनक बनाने के सहयोग , अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा , आर्थिक विकास , सामाजिक प्रगति , मानव अधिकार और विश्व शांति जैसे कार्यों में पूर्णत: संलग्न है | संयुक्त राष्ट्र ने वह कार्य कर दिखाया है जो अतीत में किसी भी संस्था ने पूर्ण नहीं किया | विश्व के १९३ देश के झंडे एक परिवार के समान एक ही स्थान पर लहराते हैं | हर एक देश जिनके आपसी संबंध एक विशाल ज्वाला के समान विध्वंस, विनाशकारी एवं दुर्दमनीय हैं , आज भाई - बंधू की तरह एक ही मंच पर विद्यमान हैं !

इन्हीं झंडों में से एक झंडा सर्वप्रभुतासंपन्न, लोकतंत्रात्मिक गणराज्य ' भारत ' का भी है | जहाँ देशभक्ति , क्रांति चेतना एवं शांति जैसे गुण व्यतिरिक्त रूप से तीव्रतर हैं और जहाँ जाने हेतु मन विहल हो जाए , उसी सोने की चिड़िया का नाम है “भारत” | भारत और संयुक्त राष्ट्र का सम्बन्ध जल और मछली के सामान विलक्षण है जो विपत्ति आने पर एक दूसरे का साथ कभी नहीं छोड़ते | भारत संयुक्त राष्ट्र के उन प्रारंभिक सदस्यों में शामिल था जिन्होंने 1 जनवरी, 1942 को वाशिंग्टन में संयुक्त राष्ट्र घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे तथा 25 अप्रैल से 26 जून, 1945 तक सेन फ्रांसिस्को में ऐतिहासिक संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय संगठन सम्मेलन में भी भाग लिया था। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों का लगातार समर्थन किया है तथा विशेष रूप से शांति स्थापना के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र चार्टर के लक्ष्यों को कार्यान्वित करने में महत्वपूर्ण रूप से योगदान दिया है। संयुक्त राष्ट्र के भूतपूर्व महासचिव कोफी अन्नान के अनुसार पिछले दशकों में भारत ने अपनी सरकार के प्रयासों तथा भारतीय विद्वानों, सैनिकों एवं अंतरराष्ट्रीय सिविल कर्मचारियों के काम के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र संध में प्रचुर योगदान किया है। विगत् वर्षों में भारत ने संयुक्त राष्ट्र को ऐसे मंच के रूप में देखा है जो अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के

गारंटर के रूप में भूमिका निभा सकता है। वर्तमान में भारत ने विकास एवं गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, जलदस्युता, निःशस्त्रीकरण, मानवाधिकार, शांति निर्माण एवं शांति स्थापना की बहुपक्षीय वैश्विक चुनौतियों की भावना में संघर्ष करने के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रणाली को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। भारत ने हमेशा से ही संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी आवाज मजबूती के साथ उठायी है। भारत ने गुट-निरपेक्ष आंदोलन तथा विकासशील देशों का समूह 77 का गठन किया जिन्होंने अधिक साम्यपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं राजनितिक व्यवस्था के लिए संयुक्त राष्ट्र के अन्दर दलील प्रस्तुत की।

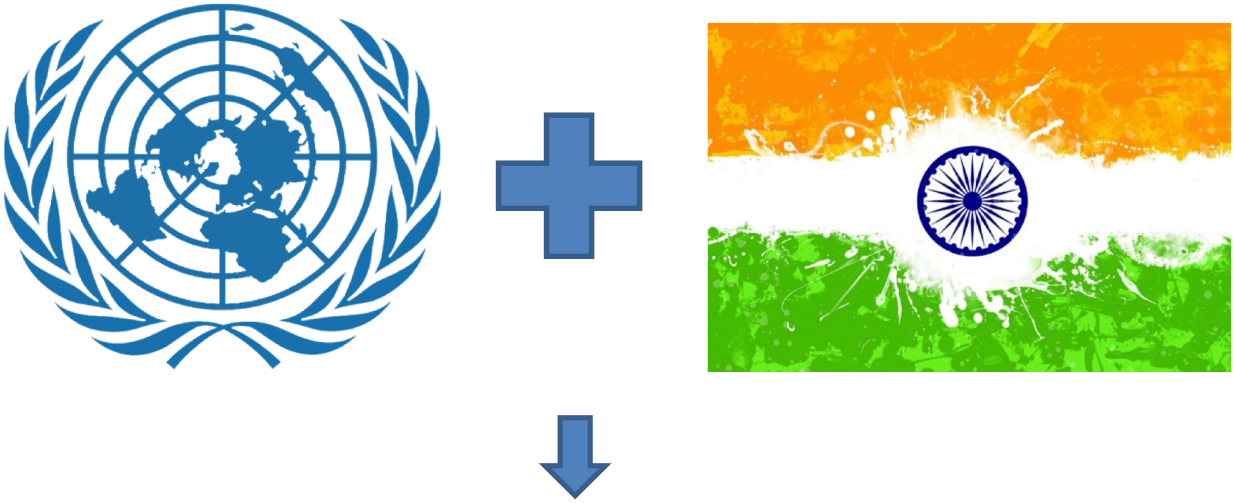

इन सब बातों का एक भिन्न अर्थ भी सामने उजागर होता है| संयुक्त राष्ट्र के कार्यों में अपना सम्पूर्ण योगदान अर्पित करने के अतिरिक्त भी भारत को सदा से संयुक्त राष्ट्र के अस्थायी सदस्य का ही दर्जा दिया गया है | इसके पीछे मुख्य कारण यह भी है कि भारत अभी भी प्रगति में कई देशों से पीछे है | भारत का साक्षरता दर , प्रति व्यक्ति आय एवं पूर्ण विकास हमारे पड़ोसी देशों जैसे श्री लंका से भी बहुत

कम है | अर्थात: संयुक्त राष्ट्र में अपनी पहचान बनाने के लिए भारत के हर एक नागरिक को देश के लिए समर्पित होना होगा | भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती जैसे अपराधों का उन्मूलन कर शिक्षा , रोज़गार एवं दया भाव का संघटन करना होगा जिससे एक नए भारत का जन्म हो सके | इसी नैतिक मूल्य को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र के भूतपूर्व महासचिव कोफ़ी आनन ने सही ही कहा था -
“मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि एक अच्छा वैश्विक नागरिक बनने के लिए लोग क्या कर सकते हैं। मैं उत्तर देता हूं कि यह आपके समुदाय में शुरू होता है।”

तो आओ मिलके ऐसे भारत का निर्माण करें जिसका झंडा हर एक क्षेत्र में शिखर से भी ऊँचा लहराए !

जय हिन्द !